सुनियोजित प्रबंधन का महत्व

लेखक संजय जैन (गुरुजी)

स्पंदन पारमार्थिक शिक्षा एवं सामाजिक उन्नयन समिति (रजि.)
उज्जैन(म.प्र.)

सुनियोजित प्रबंधन का महत्व

जैसे-जैसे दुनिया विकास के नये आयाम से प्रतिदिन रुबरु होती जा रही है वैसे-वैसे इंसान की रोजमर्रा की जिंदगी अत्यंत व्यस्त और दौड़धूप से परिपूर्ण, भागमभाग वाली हो गई है। दिनभर कार्यो को अंजाम देने के बाद भी कई बार शाम या रात्रि को याद आता है कि अमुक जरुरी काम तो छूट ही गया है या तो काम जो सबसे महत्वपूर्ण था वो तो अधूरा ही रह गया है। ऐसा हम सबके साथ लगभग प्रतिदिन या कई- कई बार होता है। क्या आप जानते हैं कि इसकी असल वजह क्या है और ऐसा क्यों होता हैं ?

इसका सीधा एवं सपाट -सा उत्तर ''सुनियोजित प्रबंधन'' की कमी। हाँ, अपने कार्यो, क्षमता और समय का तालमेल बैठाकर कार्य को उसकी महत्ता एवं आवश्यकता के हिसाब से प्राथमिकता देना चाहिये ।और उसके बाद अपनी समूची श्रमशक्ति,शारीरिक शक्ति और मानसिक कौशल का सदुपयोग करते हुए अपने कार्य को बेहतर से बेहतर अंजाम तक पहुँचाने का नियमित एवं निरंतर प्रयत्न ही ''सुनियोजित प्रबंधन'' कहलाता है।

अपने दैनिक एवं व्यावसायिक जीवन में सुनियोजित प्रबंधन को अपनाकर आप जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में बेहतर से बेहतर लक्ष्य को आसानी से एक क्रमबद्ध प्रक्रिया द्वारा हासिल कर सकते है। इसका सबसे बड़ा फायदा है आपके पास उपलब्ध समय और संसाधन का अधिकतम उपयोग, इससे आपके कार्यो की सफलता का प्रतिशत नि:संदेह रुप से बढ़ता जाता है और आप उन्नति के नये आयामों को प्रतिदिन, प्रतिक्षण महसूस करके उसका उपयोग अपने और परिवार की जीवन शैली बेहतर बनाने में कर सकते है।

लेकिन आखिर सुनियोजित प्रबंधन के मायने क्या है और हम अपने जीवन में इसका उपयोग कैसे कर सकते है ? इन सबका समाधान जानने के लिये हमको सुनियोजित प्रबंधन के विस्तृत

स्वरुप को समझने की जरुरत है ताकि हम उसका फायदा अपने स्वंय के लिये, परिवार के लिये, व्यवसाय के लिये एवं समाज तथा राष्ट्र की उन्नति के लिये ले सके। सुनियोजित प्रबंधन के कई मुख्य घटक (पार्ट) होते है :-

(1) समय प्रबंधन
(2) संसाधन प्रबंधन
(3) आर्थिक प्रबंधन
(4) बौद्धिक प्रबंधन
(5) अन्य.... प्रबंधन (परिस्थितिनुसार)

और एक योग्य एवं कुशल प्रबंधक उपरोक्त सभी घटकों का सही एवं संतुलित समायोजन करते हुए अपनी मंजिल को आसानी से हासिल कर लेता है । परन्तु सुनियोजित प्रबंधन (**Well Planned Management**) का उपयोग सभी जगह एक ही तरीका अपनाकर नहीं किया जा सकता है क्योंकि देशकाल,परिस्थिति, चुनौती एवं अवसर प्रकृति ने तो सभी को अलग-अलग प्रदान किये है फिर इस सुनियोंजित प्रबंधन का लाभ या फायदा हम अपने लिये भला कैसे उठायें? इस छोटी-सी पुस्तक के माध्यम से मैनें इसी को सरल से सरलतम स्वरुप में बताने का प्रयत्न किया है ताकि आप सभी लोग ''सुनियोजित प्रबंधन'' का अधिकाधिक लाभ हासिल करके अपने जीवन को और भी बेहतर बना सके....

इसके लिये आपको अपनी टोटल लाईफ स्टाईल को एक सुनियोजित प्रबंधन कार्यक्रम में सम्मिलित करना पड़ता है । ये सुनियोजित प्रबंधन आखिर क्या हो सकता है । जवाब बिल्कुल आसान एवं पूर्णतया स्पष्ट है और ये आपको सरलता से अपनी मंजिल एवं मनचाहे मुकाम तक पहुँचा सकता है। इसके लिये आपको सर्वप्रथम अपना स्पष्ट लक्ष्य (**Aim of life**) निर्धारित करना होता है। फिर उसके आगे की प्रक्रिया स्वत: निर्धारित होती चली जाती है। हाँ, एक बात एकदम स्पष्ट हैं कि लक्ष्य पूर्णतया स्पष्ट एवं पारदर्शी होना अति आवश्यक है नहीं तो उसको प्राप्त करनें में भी कठिनाईयाँ आती है। लक्ष्य का निर्धारण अनेक तरीकों से होता है। क्योकि इस दुनिया में प्रत्येक व्यक्ति के जीवन की प्राथमिकतायें अलग-अलग होती है

इसलिये लक्ष्य स्वनिर्धारित ही होना चाहिये। हाँ,उस लक्ष्य प्राप्ति हेतु अपनाया जाने वाला ये सुनियोजित प्रबंधन कार्यक्रम एक ही रहेगा।

इसमें एक अपवाद ये भी हो सकता है कि प्रत्येक व्यक्ति का लक्ष्य एक ही हो ये जरुरी नहीं है। उसके लक्ष्य अनेक एवं एक दूसरे से भिन्न भी हो सकते है। कोई भी व्यक्ति इस संसार में एक साथ अनेक लक्ष्यों को भी इस कार्यक्रम के तहत प्राप्त कर सकता है।इसके लिये व्यक्ति को अपनी जीवनशैली में सुनियोजित प्रबंधन कार्यक्षेत्र सुनिश्चित करना पड़ते हैं। फिर व्यक्ति द्वारा स्वनिर्धारित ये सुनियोजित प्रबंधन कार्यक्षेत्र के कार्यो के संकल्पों को पूरा करना होता है। कार्यक्षेत्र का निर्धारण व्यक्ति को स्वयं के द्वारा तय करना होता है।ये उसके द्वारा निर्धारित किये गये लक्ष्य के अनुरुप हो सकता है। क्योंकि जिस तरह से लक्ष्य अलग अलग होगा उसी तरह से उस लक्ष्य के अनुरुप उसको प्राप्ति के प्रयास का कार्यक्षेत्र भी भिन्न भिन्न हो सकता है। लक्ष्य प्राप्ति हेतु निर्धारित कार्यक्षेत्रों के चयन की प्राथमिकता उनकी उपयोगिता के आधार पर होती है। और इस उपयोगिता का पैमाना भी जाहिर है अलग-अलग ही होगा। जैसे की फैक्ट्री के स्वामी के लिये सबसे उपयोगी या महत्वपूर्ण व्यक्ति उसकी फैक्ट्री का मैनेजर याने की प्रबंधक होना चाहिये क्योंकि उसकी फैक्ट्री में सुबह आरंभ होने से लेकर कार्य के समाप्त होने तक की देखरेख वो ही करता है। जाहिर है उस फैक्ट्री स्वामी के कार्यो की सूची में सर्वप्रथम कार्य उस मैनेजर या प्रबंधक को निर्देश देना एवं आवश्यक जानकारी उससे लेना ही होना चाहिये। परन्तु इसी तरह एक दुकान में जहाँ स्वामी स्वयं बैठता है तो वहाँ पर उस दुकान का प्रबंधक या मुनीम उसकी प्राथमिकता की सूची में नहीं होना चाहिये क्योंकि वह स्वामी तो स्वयं वहाँ पर मौजूद ही रहता है। कहने का आशय है कि एक योग्यता का व्यक्ति सभी कार्यक्षेत्रों में प्रथम उपयोगी साबित हो यह जरुरी नहीं होता है। इसलिए अपने कायक्षेत्रों की प्राथमिकता लक्ष्य के अनुरुप उपयोगी होना चाहिये। इसी तरह से उस कार्य में सहायक अन्य व्यक्तियों को क्रमश: उनकी आवश्यक्तानुसार सपंर्क करके निष्ठापन हेतु किया जाना चाहिये।

इसी तरह से इस सुनियोजित प्रबंधन का उपयोग व्यक्ति अपने व्यक्तित्व एवं जिंदगी को बहुपयोगी एवं बहुआयामी बनाने के लिये भी कर सकता है। इसमें इन क्षेत्रो का पैमाना व्यक्ति की व्यक्तिगत रुचियों एवं कार्यशैली पर पूर्णतया निर्भर होता है।

क्योकि अगर कोई धार्मिक व्यक्ति ये अपनाता है तो उसे सर्वप्रथम मंदिर-तीर्थो का, फिर संत महात्माओं का, धार्मिक साहित्य का, उनकी उपलब्धता का,उनके अध्ययन मनन एवं चिंतन का, ज्ञान का प्रबंध करना पड़ेगा। और इस धार्मिक प्रबंधन के प्रबंध में उसके कार्यक्षेत्र में सहायक व्यक्तियों की प्राथमिकता उनकी उपयोगिता के आधार पर सुनिश्चित होगी।

इसी तरह एक राजनीतिज्ञ की प्राथमिकता उसकी पार्टी का सर्वोच्च नेता होता है। उसके बाद उसकी पार्टी का नंबर आता है।फिर उसकी प्राथमिकता उस पार्टी के कार्यकर्ता होते है । इसके बाद राजनीति हेतु आवश्यक संसाधनों का प्रबंधन करना होता है ।इस तरह से एक राजनीतिक व्यक्ति अपना प्रबंधन कार्यक्रम तय कर सकता है । जैसा कि अब ये सुस्पष्ट हो जाना चाहिये कि लक्ष्य निर्धारण ही इस कार्यक्रम की सर्वाधिक महत्वपूर्ण सीढ़ी होती है। आपका लक्ष्य स्पष्ट और निर्धारित अगर हो जाता है तो समझिये कि ''वेल बिगन इज़ हाफ डन''।

इसके बाद उस सीढ़ी तक कैसे और कितनी आसानी से कम से कम तकलिफ या कष्टों का सामना करते हुए विजेता की मुद्रा में पहुँच सकते है, इन सबके क्रमबद्ध और समयबद्ध प्रक्रिया का निर्धारण करना ही इस सुनियोजित प्रबंधन की संपूर्ण सफलता का एकमात्र मूलमंत्र या यूँ कहें कि प्रबंधन मंत्र है।

इसकी शुरुआत करने हेतु आपको सर्वप्रथम अपने लक्ष्य को सामने रखना होता है। फिर उस लक्ष्य की आसानी से प्राप्ति हेतु उसकी क्रियाओं के लिये आवश्यक तथ्यों, व्यक्तियों,स्थानों, संसाधनों एवं इच्छाशक्ति की उपयोगिता की क्रमबद्धता निर्धारित करना होती है। फिर उस सीरियल याने की क्रमबद्धता की शुरुआत क्रियान्वयन के द्वारा की जाती है। इसको आप एक्शन प्लान भी कह सकते है । एक्शन प्लान को अमलीजामा पहनाने हेतु योग्य प्रतिभाओं या व्यक्तियों का चयन उसकी दूसरी महत्वपूर्ण प्रक्रिया होती है। क्योकि योग्य पार्टनर या सहकर्मियों या अधिनस्थों पर इस प्लान की सफलता बहुत अधिक निर्भर करती है। क्योंकि आपके अंदर की योग्यता-बुद्धिमानी एवं रचनात्मकता को अमलीजामा ये ही लोग तो पहना सकते हैं।

इसलिये इस चयन प्रक्रिया का सबसे ज्यादा ध्यान रखें।इसके पश्चात की जरुरी प्रक्रिया होती है इन चयनित व्यक्तियों को कार्यभार या जिम्मेदारी सौंपने की। ये प्रक्रिया भी अत्यंत आवश्यक है क्योंकि ''जिम्मेदारी का विकेंद्रीकरण'' ही सफल प्रबंधन का एक उपयोगी सूत्र माना जाता है। इसके उपरांत आपको अपने स्वविवेक का अत्यंत चतुराईपुर्वक उपयोग करके प्रत्येक चयनित व्यक्ति की बुद्धिमानी, उसके योग्यता और कार्यक्षमता के सटीक मूल्यांकन के आधार पर कार्य या जिम्मेदारी का जिम्मा देना चाहिये। वस्तुतः आपके द्वारा लक्ष्य प्राप्ति की सफलता हेतु ये इस कार्यक्रय की तीसरी महत्वपूर्ण कड़ी है। इस प्रक्रिया के पश्चात अब आपको क्रियान्वयन की प्रक्रिया याने की ऑपरेशन मोड चालू करना चाहिये । इस ऑपरेशन मोड में आप अपने द्वारा चयनित सहयोगियो की सलाह भी ले सकते है। उनके कुछ अनुभव एवं विचारो की क्रिएटीविटी को जो आपके हित में हो,अपने कार्यक्रम क्रियान्वयन की रुपरेखा मे सम्मिलित कर सकतें है। जिससे कि इस प्रक्रिया में आगे आने वाले कष्टो,तकलिफों,बाधाओं से निपटने की रुपरेखा व्यवस्थित रुप से बनाई जा सकती है। सही सफल उद्यमी वही होता है जो अपनी प्रगति के मार्ग में आगे आने वाले गतिरोधो को पहले से ही अनुमानित करके उनकी परिस्थितिनुसार निदान का प्रबंध पहले से ही कर के रखता है ताकि ऐन वक्त पर किसी भी आपात स्थिति या देवी आपदा,विपदा,कष्ट इत्यादि का सामना करने में ज्यादा मुश्किल पेश ना आये। वो एक सफल कहावत है ना खरगोश और चूहे की, जो हमे बार-बार ये सीख देती है कि भागना नहीं समय पर पहुँचना महत्वपूर्ण होता है। इसका आशय ये है कि आग लगने पर कुआँ खोदने की हायतौबा मचाने से पहले ही पानी का पर्याप्त प्रबंध कर लेना ही एक समझदार प्रबंधक की पहचान होती है।क्योकि ऐन वक्त पर संसाधन जुटाने का भुगतान बहुत ज्यादा करना पड़ता है चाहे वो किसी भी रुप में जैसे कि मानसिक शारीरिक या फिर आर्थिक।

और तो और कई बार मुँहमाँगी कीमत चुकाने या मनचाही शर्तो को मानने के बाद भी समस्या का तुरन्त निदान सम्भव नही हो पाता है। अधिकांश उद्यमी पर्याप्त क्षमता एवं बुद्धिमत्ता के होते हुए भी इस अवस्था में असफल हो जाते हैं क्योंकि उनकी प्रबंधन योजना मात्र की परिचालन अवधि के पैमाने के अनुरुप ही निर्धारित रहती है।

उसमें इस तरह की आपात स्थितियों से निपटने का माकूल प्रबंध या बंदोबस्त नहीं होता है। ऐनवक्त पर या तो संसाधनो की कमी आड़े आ जाती है या फिर उन संसाधनों का प्रबंधन करने वाले व्यक्तियों की अनुपलब्धता हो जातीहै। फिर उस वक्त की तत्कालीन गड़बड़ परिस्थिति और हड़बड़ाहट की वजह से कई बार जो निर्णय लिये जाते है वो सही परिणाम भी नही देते है। अन्ततः प्रबंधक हताशा और निराशा के अंधकार के धने कोहरे की चपेट में आ जाता है। और कई बार तो उसकी नई क्रियान्वित योजना या फिर जमा जमाया कारोबार एकदम से अस्त-व्यस्त हो जाता है। वो व्यक्ति उद्यमी व्यापार व्यवसाय की नुकसानी के दायरे मे जाना आरंभ कर देता है।

इन सबसे बचने का अग्रिम समुचित प्रबंध करना ही इस कार्यक्रम की चौथी महत्वपूर्ण कड़ी या सूत्र है। प्रख्यात विश्वविजेता नेपोलियन इस प्रबंधन कार्यक्रम के सबसे महत्वपूर्ण उदाहरण एवं अनुकरणीय व्यक्ति है। वो किसी भी युद्ध या लड़ाई के पहले असली रणनीति की एक साथ तीन प्लानिंग अलग-अलग तरीको से उसकी व्यवहारिक परिस्थितियो एवं रणनीति का सूक्ष्मता से अध्ययन कर कार्य योजना (MODE OF OPERATION) तैयार करके किसी भी युद्ध आरंभ होने से एक दो दिन पूर्व में ही तैयार करके रख देता था एवं युद्ध आरंभ होने पर निश्चितंता से बेफिक्र होकर अपनी योजना का क्रियान्वयन होते देखता रहता था। यही नहीं उन योजनाओं से भी वो सबक लेकर युद्ध रणनिति बनाने में मशगूल हो जाता था। यही नहीं उसका होमवर्क इतना जबरदस्त होता था कि लड़ाई के दौरान होने वाली आकस्मिक घटनाओं या विपदाओं का उसके द्वारा पूर्णतः गहराई से विस्तृत अध्ययन अपने दिमाग में कर लिया जाता था और उस समय की बदलती परिस्थितियों के परिवेश के अनुकूल विजयी होने की दूसरी प्लानिंग तुरन्त अमल में लाने का हुक्म बजा देता था। ये था उसका एक के बाद एक युद्ध जीतने का राज। आप स्वंय सोचिये की युद्ध जैसी लगातार बदलती परिस्थितियों का पहले से आंकलन कर लेना एवं उनसे निपटने की कार्ययोजना भी अग्रिम रुप से पहले ही तैयार कर लेना भी क्या कोई साधारण बुद्धि का मनुष्य कर सकता है? जवाब बिलकुल स्पष्ट है नही।

इससे सिद्ध होता है कि सम्राट नेपोलियन उस समय के प्रबंधन का सही एवं योग्य शख्सियत था। बस इसी तरह का सफल पूर्व आंकलन किसी भी व्यक्ति या उद्यमी की प्रगति की राह को और अपेक्षाकृत आसान कर देता है ।क्योंकि तत्कालिन विपरित परिस्थितियों से जूझने हेतु आवश्यक संसाधनों की पूर्ति आर्थिक प्रबंधन एवं मानसिक तैयारी वो पहले से ही कर चुका होता है जिससे की उस सबसे निपटने मे व्यतीत होने वाला श्रम एवं धन का समुचित उपयोग करके वो अपनी सफलता की गति को निर्बाध रुप से

परिसंचालित करता रहता है। इससे उसको दुगना फायदा भी होता है। एक तो उसकी कार्ययोजना की गति की समयावधि तय समय में अपना लक्ष्य या मंजिल प्राप्त कर लेती है। दूसरा योजना लेट ना होने की वजह से उस योजना पर आने वाले अनावश्यक खर्च से भी उसका बचाव हो जाता है।इस तरह वो अपने प्रतियोगियों से आगे भी निकल सकता है। इसके साथ अपने अलग लक्ष्य की योजना भी बना सकता है। क्योकि अपने तत्कालीन व्यापार व्यवसाय की सफलता की बुनियाद तो वो स्वंय ही अपनी बेहतर प्लानिंग की बदौलत रख ही चुका होता है। अपने इस बेहतर समय प्रबंधन, योजना, प्रबंधन की सीढियाँ उसको उसकी अगली मंजिल तक आसानी से पहूँचने में बहुत मदद करती है। हाँ,इस अग्रिम कार्यप्रणाली प्रबंधन की विधियाँ देशकाल परिस्थितियों, व्यापार, व्यवसाय के अनुसार बदल भी सकती है। जैसा की पहले बताया जा चुका है कि जरुरी नही है कि एक ही अग्रिम कार्ययोजना पद्धति सभी उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु एक जैसी ही मददगार साबित हो। इसका निर्णय तो व्यक्ति विशेष को अपने स्वविवेक से ही करना होता है। बिल्कुल स्पष्ट है जो योजना की कार्यप्रणाली अगर आप राजस्थान के रेतीले रेगिस्तान के लिये बना रहे है तो क्या वही योजना शिमला या कश्मीर की बर्फीली वादियों मे कारगर हो सकती है ?नहीं ना। ठीक इसी तरह अंतरिक्ष यान एवं आजकल अंतरिक्ष यात्री भी भेजे जा रहे है। ये समस्त अंतरिक्ष कार्य योजना अग्रिम समय प्रबंधन की सर्वाधिक उन्नत एवं सफल मिसाल है। क्योंकि दुर-सुदूर अंतरिक्ष में स्थित आकाशगंगाओं (**Galaxy**)के मध्य स्थित ग्रहों की खोज करना एवं उसके पश्चात उस ग्रह के वातावरण का सूक्ष्म अध्ययन जैसे की वहाँ का तापमान, वहाँ का गुरुत्वाकर्षण बल(**Gravitational Force**) वहाँ के वातावरण की आर्द्रता इत्यादि का सूक्ष्मता से अध्ययन करके पहले वहाँ खोजी यान भेजकर ज्ञात जानकारी या सूचनाओं का वेरिफिकेशन किया जाता है एवं कुछ अंतर होने पर नयी परिस्थितियों का समायोजन करके वहाँ की जानकारी को मूर्तरुप प्रदान किया जाता है। इसके लिये किसी ग्रह विशेष जैसे की चाँद या मगंल ग्रह की सम्पूर्ण भौगोलिक जानकारी जुटाकर उसका अत्यन्त विस्तृत सूक्ष्म से सूक्ष्मतर अध्ययन करके ठीक वैसा ही कृत्रिम वातावरण यहाँ पर तैयार किया जाता है।

वस्तुत: यही इस कार्यक्रम की सबसे खुबसूरत घड़ी है। जिस समय आगे होने वाली परिस्थितियों को हूबहू क्रियान्वित एक निश्चित दायरे में किया जाता है और उनसे सामना करने या निपटने का परीक्षण भी दिया जाता है जिसको कि एडवांस ट्रेनिंग प्रोग्राम भी कह सकते हैं। इसके पश्चात इस कार्यक्रम में उनके द्वारा प्राप्त विभिन्न अनुभवों को भी शामिल करके एक ठोस और निश्चित कार्य प्रणाली तैयार की जाती है और फिर क्रमबद्ध रुप से उस कार्ययोजना पर भी कार्य किया जाता है। फिर आता है वो समय जब अग्रिम प्रबंधन कार्यक्रम की असली कसौटी शुरु होती है क्योंकि यहाँ पर सोचने-समझने का बहुत ही अल्प अवसर प्राप्त होता है व निर्णय को अमल मे लाने हेतु समय एवं परिस्थितियों का अत्यधिक नाजुक दबाव रहता है। क्योंकि इस समय की गई एक छोटी-सी भूल भी समस्त प्रोजेक्ट को तहस-नहस कर सकती है। इसीलिये इस अग्रिम कार्ययोजना की क्रियान्वयन प्रणाली का संपूर्ण निर्धारण भी पहले से ही विस्तृत एवं निश्चित रुप से तैयार कर दिया जाता है एवं उस समय मौके या हालात पर उपस्थित व्यक्ति को तो मात्र उस अग्रिम तयशुदा प्रबंधन कार्यक्रम के निर्देशों का अमल करना मात्र होता है। सब कुछ यहाँ तक कि उसकी व्यक्तिगत मुवमेंट जैसे खाना पीना चलना इत्यादि भी पूर्व निर्धारित रहता है। प्रबंधन के उच्चतम स्तर की परिकल्पना किजिए कि अग्रिम प्रबंधन के उस उच्चतम आदर्श स्तर का हम अनुसरण अगर कर ले तो सफलता का पैमाना कितना बढ़ सकता है क्योंकि इस धरती की कई -कई वर्तमान परिस्थितियों को हम गहराई से अध्ययन कर सकते है। यही नही अपनी शक्ति और सामर्थ्यानुसार उसमें तनिक फेरबदल भी सकते है। इसलिये अगर हम उस स्तर की अग्रिम प्रबंध की कार्ययोजना को अपने दैनिक क्रियाकलापों में अगर शामिल कर ले तो जरा विचार किजिए कि कोई भी समस्या चाहे जितनी विकराल दूसरो के लिये क्यों ना हो वो समस्या अपने प्रबंधन कार्यक्रम की तैयारियों के समक्ष भला क्या टिक पायेगी, नही ना।

बस ये ही है संपूर्ण प्रबंधन कार्यक्रम की संपूर्ण सफलता का राज कि आने वाली समस्त ज्ञात अज्ञात परिस्थितियों का पूर्वानुमान लगाकर उससे निपटने हेतु समस्त आवश्यक संसाधन पहले से ही जुटाकर रखना चाहिये। चाहे विश्व विजेता नेपोलियन की तरह या फिर किसी भी अंतरिक्ष कार्यक्रम की कार्य योजना के भाँति।

हाँ, इसमें एक बात का विशेष ध्यान रखना चाहिये कि आपकी तत्कालीन परिस्थितियों से निपटने की योजना भले किसी भी स्तर की हो

उसमें उस समय की आपात परिस्थितियों में अचानक आये हुये बदलाव या परिवर्तन के अनुरुप सामना करने हेतु गुंजाईश अवश्य होना चाहिये। याने कि कोई भी योजना की सफलता उसकी लचीली अनुकुलता पर भी बहुत कुछ निर्भर करती है इसका आशय है जो भी कार्य योजना हो उसमें परिवर्तन की गुंजाईश हमेशा बनी रहनी चाहिये। कहते है ना परिवर्तन ही जीवन और सफलता का नियम है।

आज विज्ञान और वैज्ञानिक इसी थ्योरी पर हमेशा काम करते है और पिछली योजनाओं एवं खोजों से प्राप्त निष्कर्ष एवं ज्ञान को हमेशा अपनी अगली परियोजनाओं के सफलतम क्रियान्वयन में उपयोग करते है। ये सारी प्रक्रियाएँ भी एक विस्तृत प्रबंधन कार्यक्रम की भाँति शनै: शनै: कार्यरुप में परिणीत हो जाती है। एक निरंतर नवीन स्वरुप में अपनी शून्यता से पूर्णता तक जैसा कि पहले उन्नत संसाधनों की अनुपलब्धता की वजह से यह माना जाता था की पृथ्वी ही एक मात्र धुरी या केन्द्र हैं जिसके आसपास संपूर्ण ब्रह्माडं के समस्त तारें, सितारें, ग्रह, उपग्रह यहाँ तक की चाँद एवं सूरज भी पृथ्वी की धुरी की परिक्रमा निरंतर करतें रहते है। फिर विज्ञान एवं ज्ञान की प्रगति के पश्चात आज का सर्वमान्य सत्य सबके सामने आ चुका है कि सूर्य ही संपूर्ण ब्रह्माडं की धूरी है जिसके आसपास हमारी आकाशगंगा के समस्त सदस्य परिक्रमा करते है। इस तथ्य को आज सर्वमान्य सिद्धांत बनाने में विज्ञान की समस्त खोजों एवं जानकारियों के एक विस्तृत प्रबंधन कार्यक्रम की संपूर्णता की बानगी मिलती है।

बुद्धिमान व्यक्ति उस समय कार्य करते हैं,

जब उनके पास समय रहता है,

लेकिन मूर्ख व्यक्ति उस समय कार्य करते है,

जब उनके लिए ऐसा करना बहुत जरुरी हो जाता है।

॥इति सिद्धम्॥